

दिनांक 4 दिसंबर, 1984

म. श्री. वि./सोनीपत/88-84/33333--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं महेश बुड़ प्रोडक्ट्स प्रा० लि०, खेड़ा, बहालगढ़ (सोनीपत) के श्रमिकों ने अवृत्त विद्युत वा उत्तर प्रवान्धकों के बीच इसमें इयरे बाद लिखित मामले में कोई ग्रोथोगिक विवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय द्वारा निर्दिष्ट नहीं भांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब ग्रोथोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अप्र०/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.ई.-अप०-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादपत्र या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों द्वारा दोनों विवादप्रस्त भामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित भामला है।—

क्या श्री प्रह्लाद सिह वो सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठाक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्कार है ?

म. श्री. वि./सोनीपत/88-84/33840--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं महेश बुड़ प्रोडक्ट्स प्रा० लि०, खेड़ा, बहालगढ़ (सोनीपत), के श्रमिक श्री किशोरी लाल तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोथोगिक विवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट नरना भांछनीय समझते हैं;

इस लिए, महेश ग्रोथोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 के उपचारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अप्र०/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.ई.-अप०-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त भामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित भामला है।—

क्या श्री किशोरी लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्कार है ?

सं. श्री. वि./सोनीपत/88-84/33847--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं नहेश बुड़ प्रोडक्ट्स प्रा० लि०, खेड़ा बहालगढ़ (सोनीपत), के श्रमिक श्री कंचन प्रसाद तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोथोगिक विवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना भांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब ग्रोथोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 के उपचारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अप्र०/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.ई.-अप०-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त भामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित भामला है।—

क्या श्री कंचन प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्कार है ?

सं. श्री. वि./सोनीपत/88-84/33854--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं महेश बुड़ प्रोडक्ट्स प्रा० लि०, खेड़ा बहालगढ़ (सोनीपत), के श्रमिक श्री राम किशोर तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोथोगिक विवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना भांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल द्वारा उपधारा 10 की अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना नं. 3361-ए.प.ओ. (ई)-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन पठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादपत्र या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों द्वारा विवादपत्र भागला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है।

वया श्री रम विजयन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

एम. के. महेश्वरी,
संयुक्त सचिव, हरियाणा सरकार,
अम विभाग।

दिनांक 3 रितम्बर, 1984

स. ओ.वि./सोनीपति/194-84/35508.—कृकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं आरर्गनो रवड़ प्रालि, इण्डरट्रीयल ऐंजिनीयों, सोनीपति के अधिक श्री शिव नाथ तथा उसके प्रबन्धकों के द्वारा इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद

और चूकि हरियाणा के राज्यपाल, विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाढ़नीय समझते हैं :

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा प्रकाशे अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना नं. 3361-ए.प.ओ. (ई)-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन पठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादपत्र या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों द्वारा विवादपत्र भागला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है।

वया श्री शिव नाथ की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स. ओ.वि./सोनीपति/194-84/35516.—कृकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मेटाकेम इण्डस्ट्रीज खेवड़ा, रोड, घहाल-गहा, सोनीपति के अधिक श्री गोपाल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के द्वारा इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

और चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाढ़नीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा प्रकाशे अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3361-ए.प.ओ. (ई)-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन पठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादपत्र या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों द्वारा श्रमिक द्वारा लिखा तथा विवादपत्र भागला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ;—

वया श्री गोपाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स. ओ.वि./सोनीपति/194-84/33522.—कृकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मेटाकेम इण्डस्ट्रीज, खेवड़ा, रोड, घहाल-गहा, सोनीपति के अधिक श्री रामकेश कुमार भारा तथा उसके प्रबन्धकों के द्वारा इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

और चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाढ़नीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई

ग अपनी जा पर्याप्त करते हैं हिन्दौस्थान के राजवाल इसके डारा समकारी अधिकारी म. 9641-1-अम/70/32573, दिनांक 6 अप्रैल 1971, में पारदिति प्रासादी प्रतिवाचा सं 3364-7-0-अम. (ड) 70/ 348, दिनांक 8 मई, 1970, डारा उक्त अधिनियम की ओर 2-हो-प्रयोग गठित अपने न्यायालय, गोदावरी, को विभागीय या उम्मीद या उम्मीद सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायालय पर देते हुए अनुदान करते हैं जो कि उक्त प्रक्रियाएँ तात्पर अभिक औ वीज्ञ या नो विवादप्रस्त भागका हैं या उक्त विवाद में सुसंगत या सम्बन्धित मामला है—

वृगा श्री राकेश कम्पार शर्मा को सेवायों का समापन न्यूयार्कचित् तथा ठोक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकंदार है?

मृ. श्री कि/योनोपत्त/ 194-84/33529,- दूर्कि हिंदियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. मेटाकेम इण्डरट्रीज, सेवडा रोड, अहमदाबाद, योनोपत्त, के अधिक श्री भूरा मल वर्मा तथा उसके प्रत्यन्धियों के बीच इसमें इयके बाद नियुक्त मामले में कोई ग्राह्योगिक विवाद

प्रारं एकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को व्याप्ति निर्भय हेतु निर्दिष्ट करना बांधनीय समझते हैं :

इसनिए, अब, श्रीदांगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 के छप्पंड (ग) द्वारा प्रदान की गई अधिकारी ना प्रयोग करते हुये हायिकाणा के राज्यपाल इस के द्वारा याकारी अधिकूचना सं. 9641-१-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर 1970, के साथ प्रदित सरकारी अधिकारी नं. 3854-१-उभ.आ. (३)-70/1318, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम द्वारा / के श्रीगण गठित श्रम भ्यालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुगंगत या उसमें सम्बन्धित नीचे लिखा मामला व्याय-निर्णय प्राप्त करने के लिए उक्त प्रदस्थकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है। या उक्त विवाद में सुसंगत या व्यायस्थित मामला है।

या ओं परा मल वर्मा को मेयाओं का गमापन न्यायोन्भित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुक्मदार है?

प्रो. वि. गोदाना/१६६-४/३३३३६।—बुकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मे. थ्रोका यिवेटर प्रा.लि., रोहतक, अमरकूण और आनंद स्वाक्षर तथा उसके प्रबन्धकों से भी इसमें इसके बाद लियित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है;

प्रोर तकि हरियाणा के यज्यपाल विवाद को न्यायतिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाधनीय समझत है।

२८ मुलिया, अब, श्रीदोसिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई अधिनियमीय धरा प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, ने मात्र पठित सरकारी अधिनियम का नं. 3864-एस.ओ. (ई) 70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उत्तर अधिनियम की धारा 1 के प्रधीन गठित श्रम व्यापार औद्योगिक, की विवादशस्त्र या उससे सुरक्षित नीचे लिखा मामला आनन्दित रूप निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अधिकके बीच या तो विवादशस्त्र मामला है या उक्त विवाद से सुरक्षित या सम्बद्धित मामला है।

क्या श्रो ग्रान्ति स्वरूप की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है?

दिनांक: १५ सितम्बर, १९८४

म.आ वि./भोगीपति/195-83/33903.-कृकि 'हरिगांगा' के शब्दात्म की गय है कि मैं एस्के इण्टरनेशनल एम-4, एस-ट्रियल प्लिया. गोनीपै, के प्रमुख श्री मंत्रालय तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई घोषणाप्रियंग किन्होंन है :

और वही हरियाणा के राज्यपाल विधद को न्यायनिर्णय हेतु नियुक्त करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिंग, ग्रन्थ, श्रीद्योगिक विवाद अधिनिधिम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करने पर हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सत्कारी अधिसूचना सं. 964-1-अष्ट/70/32573, दिनांक 6 नवंबर, 1970, के अधीन गठित सरकारी अधिसूचना नं. 3864-ए. एस. पो. (ई)-१०/१३४८, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनिधिम की घारा 7 के अधीन गठित अमन्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला, न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करने हैं जो नि. उक्त अवधिकारों तथा अभिक के बीच था तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री पंचालिया की सेवाओं का समाजन न्यायोचित दृष्टि है ? यदि नहीं, तो कहूँ कि स राहत का हुक्मदार है ?